بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡکَ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصۡحَابِکَ یَارَسُوۡلَ اللّٰہِ ○

نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَاٰلِہٖ وَصَحۡبِہٖ اَجۡمَعِیۡنَ ○

शाहे विलायत व करामत

हज़रत मौला अली मुश्किलकुशा रज़ियल्लाहु अन्हु

मौला अली ने वारी तेरी नीद पर नमाज़
वह भी नमाज़े अस्र जो आला ख़तर की है

शैर शमशीरे ज़न शाहे ख़ैबर शिकन
पर तवे दस्ते क़ुदरत पे लाखों सलाम

ऐ ईमान वालो ! हम लोग अहले सुन्नत व जमाअत हैं और अहले सुन्नत यानी सुन्नी मुसलमान का ईमान व अक़ीदा है कि महबूबे मुस्तफ़ा हज़रत अबू बकर सिद्दीक़, मुरादे मुस्तफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म, मतलूबे मुस्तफ़ा हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन, दामादे मुस्तफ़ा हज़रत मौला अली मुश्किलकुशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन व उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा और जुम्ला सहाबए किराम व अहले बैते अतहार रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन हक़ पर थे और जन्नती हैं और इन तमाम नुफ़ूसे क़ुदसिया की उल्फ़त व महब्बत ऐन ईमान और इनकी इत्तिबाअ् अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़ुशनूदी का ज़रीआ है।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अली मुश्किलकुशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, ख़ातूने जन्नत सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के शौहर नामदार और हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु व हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के वालिदे बुज़ुर्गवार हैं। सादाते किराम और औलादे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का सिलसिला आपसे जारी हुआ। विलायत व करामत के मअदने मख़ज़न भी आप हैं। जुम्ला औलिया अग़वास, अक़ताब, अबदाल आपके फ़ुयूज़ो बरकात से मुस्तफ़ीज़ हैं और क़ियामत तक विलायत का सिलसिला आप ही के फ़ैज़ से जारी रहेगा।

ज़मीन से आसमान तक अरबो अजम, बहरो बर में आपके फ़ज़्लो कमाल और आपकी शुजाअत व बहादुरी का शहरा आम है।

शाहे मर्दां, शैरे यज़्दां, क़ुव्वते परवर दिगार
ला फ़ता इल्ला अला ला सैफ़ ज़ुल्फ़िक़ार

पैदाइश

हज़रत अली मुश्किलकुशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एलाने नुबुव्वत से दस, ग्यारह साल या सात आठ साल पहले ख़ानए काबा में पैदा हुए। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 112)

मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की वसियत

अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने बड़े साहेबज़ादे से फ़रमाया : ऐ हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मैं तुझको वसियत करता हूँ और मेरी वसियत तुझको काफ़ी है और यह वही वसियत है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुझको की है।

1) पस जब हालात ऐसे वैसे हों तो घर में रह और अपने मआसी पर रोया करो।
2) ऐ फ़रज़न्द मैं तुझको वसियत करता हूँ कि नमाज़ वक़्त पर अदा कर।

3) जब तू ज़कात दे तो उसके मुस्तहिक़ को दे।
4) ख़ुशी और ग़ुस्से की हालत में म्याना रवी और अद्ल इख़्तियार कर।
5) पड़ोसी के साथ नेकी कर, मेहमान की तौक़ीर व तकरीम कर।
6) मिस्कीनों, ग़रीबों से महब्बत कर और उनके पास बैठा रह।
7) मौत को याद कर और तवाज़ोअ़ इख़्तियार कर कि यह अफ़ज़ल इबादत है।
8) ख़लवत व जलवत (मजमा व तन्हाई) में अल्लाह तआला से डर
9) हर क़ौल व फ़ेअ़ल को शरीअत के मुताबिक़ कर।
10) आख़िरत के उमूर (कामों) में जल्दी कर और दुनिया के कामों में ताम्मुल कामों व तहक़ीक़ कर यहाँ तक कि उसमें तेरे लिये भलाई हो।
11) ऐसे मक़ामात पे न जा जहाँ तोहमत का अन्देशा हो।
12) ऐसी सोहबत में न जा जहाँ बुराई का अन्देशा हो, जो ख़ुद बुरा है अपने हम सोहबत को भी बिगाड़ देता है।
13) अपने तमाम आमाल को अल्लाह तआला के लिये ख़ास और ख़ालिस कर
14) गुनाह करने वाले को गुनाह से रोक, उसे अच्छी बात का हुक्म कर और बुरी बातों से मना कर।
15) नेक व सालेह शख़्स से दोस्ती रख, ब सबब उसकी नेकी के।
16) फ़ासिक़ व गुनाहगार शख़्स से किनारा कर और दिल में उसको बुरा समझ। अपने हर काम में उसको दूर रख ताकि ऐसा न हो कि तू भी उस जैसा हो जाए
17) बाज़ार में न बैठा कर।
18) बे वक़ूफ़ों से बहस व हुज्जत न कर और उनको दोस्त भी न बना।
19) सुकूत को हमेशा अपने ऊपर लाज़िम कर ताकि ग़नीमत हासिल हो।
20) अपने साथी से होशियार रह और दुश्मन से इज्तिनाब कर।
21) ऐसी मजलिसों को इख़्तियार कर जिनमें ख़ुदाए तआला का ज़िक्र होता हो और दुआ ज़्यादा किया कर।

ऐ मेरे प्यारे फ़रज़न्द हसन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) मैंने तुझे नसीहत करने में कुछ कोताही नहीं की, अब मेरे और तेरे दरमियान जुदाई होती है। अपने भाई हुसैन और दूसरे भाइयों के साथ नेक सुलूक इख़्तिार करते रहना। अल्लाह तआला मेरे बाद तुम्हारा निगेहबान है मैं उससे सवाल करता हूँ कि तुम्हारे कामों की इस्लाह करे और सरकशों और बाग़ियों के शर से तुम्हें मेहफ़ूज़ रखे। आमीन। बेटा सब्र करना यहाँ तक कि अल्लाह तआला का हुक्म आ जाए। **ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम 0 (नूरुल अब्सार, स. 117)**

और हज़रत अब्दुर्रहमान जामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने तारीख़ुल ख़ुलफ़ा में आपकी वसियत को इस तरह नक़्ल किया है।

हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ज़ख़्मी होने के बाद अपने बड़े बेटे इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को वसियत की, मेरे फ़रज़न्द हसन मैं तुम को वसियत करता हूँ कि :

1) सबसे बड़ी तवंगरी (मालदारी) अक़्ल की तवानाई है।
2) बे वक़ूफ़ी से ज़्यादा कोई मुफ़िलसी और तंगदस्ती नहीं।
3) ग़ुरूर व घमण्ड सबसे सख़्त वहशत हैं।
4) सबसे अज़ीम ख़ुल्क़ (आदत) महरबानी करम महरबानी है। और

दूसरी चार बातों से इज्तिनाब (परहेज़) करना है।

1) अहमक़ की महब्बत से बचो इस लिये कि नफ़ा पहुँचाने का इरादा करता है लेकिन नुक़सान पहुँचाता है।
2) झूटे से परहेज़ करो इस लिये कि वह दूर को नज़दीक और नज़दीक को दूर कर देता है
3) बख़ील से बचो दूर रहो इस लिये कि वह तुमसे उन चीज़ों को छुड़ा देगा जिनकी तुम्हें ज़रूरत है।
4) गुनाहगार, फ़ासिक़ से किनारा कश रहो, इस लिये कि वह तुम्हें थोड़ी चीज़ के बदले में बेच डालेगा।

मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के अक़वाले मुबारका

सर चश्मए विलायत मख़ज़ने करामत काने इल्मो हिकमत अमीरुल मोमिनीन सय्येदुस्सादात हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा मुश्किल कुशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के चन्द अक़वाले मुबारका जो हीरे जवाहरात से कहीं ज़्यादा क़ीमत रखते हैं, रुश्दो हिदायत के लिये बयान किये जा रहे हैं।

1) हमारे आक़ा मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दोस्त वह शख़्स है जो अल्लाह तआला की फ़रमांबरदारी करता है और आपका दुश्मन वह शख़्स है जो अल्लाह तआला की ना फ़रमानी करता है।
2) बे शक अल्लाह तआला ने तुम पर फ़र्ज़ को लाज़िम किया है तो उन्हें ज़ाए न करो।
3) बड़े बड़े गुनाहों का कफ़्फ़ारा यह है कि गिरे पड़े ग़मगीन लोगों की मदद की जाए और मुसीबत ज़दा लोगों को ख़ुश किया जाए।
4) सख़ावत यह है कि साईल के सवाल से पहले दिया जाए और वह अता जो सवाल करने पर हो वह सख़ावत नहीं।
5) माल व दौलत तमाम ख़्वाहिशात की यानी गुनाहों की बुनियाद है।
6) औरत एक ऐसा बिच्छू है जिसका काटना निहायत शीरीं है।
7) तू अपने बीवी बच्चों में मशग़ूल होने को अपना सबसे बड़ा शग़ल न बनाना क्योंकि अगर तेरे बीवी बच्चे अल्लाह तआला के दोस्तों में से हैं तो अल्लाह तआला अपने दोस्तों को कभी ज़ाए नहीं करता और अगर वह अल्लाह तआला के दुश्मनों में से हैं तो तेरे लिये अल्लाह तआला के दुश्मनों का ग़म खाना और उनमें मशग़ूल रहना किसी तरह भी जाइज़ नहीं।
8) जब अक़्ल कामिल हो जाती है तो कलाम कम हो जाता है।
9) कोई दौलत अदब के बराबर नहीं और कोई मददगार आपसी मशवरे के बराबर नहीं।

10) सबसे बड़ी गुरबत अच्छे साथी का न होना।
11) सदक़ा देना एक कामियाब दवा है।
12) लोगों में अफ़ज़ल वह शख़्स है जो मुआफ़ करने वाला है।
13) तमअ़ यानी लालच इन्सान को ज़लील कर देती है।
14) जो शख़्स अहले बैत को महबूब रखता है उसको फ़क्र (ग़रीबी) का लिबास पहनने के लिये तैय्यार होना चाहिये।
15) कोई बुज़ुर्गी तक़वा व परहेज़गारी के बराबर नहीं।
16) कोई तिजारत नेक अमल के बराबर नहीं।
17) कोई इल्म ग़ौर व फ़िक्र के बराबर नहीं।
18) दुनिया की मिसाल उस सांप की सी है जो छूने से तो मुलाइम व नर्म मालूम होता है मगर उसके अन्दर ज़हर भरा हुआ है।
19) इल्मे दीन के बग़ैर इताअते इलाही नहीं हासिल कर सकता।
20) उन लोगों में से न हो जाओ जो बग़ैर अमल के आख़िरत में बख़्शिश की उम्मीद रखते हैं
21) ख़ामोशी इख़्तियार करने से हैबत पैदा होती है।
22) दुनिया की तलख़ी (कड़वाहट) आख़िरत की शीरीनी है और दुनिया की शीरीनी आख़िरत की तलख़ी है।
23) अपने दोस्त के साथ हद से ज़्यादा दोस्ती न बढ़ाओ शायद वह किसी दिन तुम्हारा दुश्मन हो जाए और तुम्हारे सारे राज़ ज़ाहिर कर दे।
24) वह थोड़ा अमल जिसे तू हमेशा करता है उस ज़्यादा अमल से बेहतर है जो तू कभी कभी करता है।
25) सवाल न करना फ़क़ीर की ज़ीनत है और शुक्र करना मालदार की ज़ीनत है।
26) सख़्त तरीन गुनाह वह है जिसे गुनाहगार हलका व मामूली समझे।
27) जिस शख़्स ने अपने नफ़्स के ऐब की तरफ़ नज़र की वह दूसरों की ऐब जोई से बाज़ रहा।

28) सबसे बड़ा ऐब यह है कि तू दूसरों के ऐब को देखे।

29) जो शख़्स मकान में जाकर दरवाज़ा बन्द कर ले उस शख़्स को रिज़्क़ कहाँ से हासिल होगा। फ़रमाया जहाँ से अजल यानी मौत आएगी।

30) दो भूके ऐसे हैं जो कभी सेर नहीं होते। एक तालिबे इल्म, दूसरा तालिबे दुनिया।

31) इन्क़िलाबे हालात में मर्दों की असलियत मालूम हो जाती है।

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला की बारगाहे बेकस पनाह में उसके प्यारे नबी और मेहबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के वसीले से दुआ करते हैं कि वह हमें हक़ समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़, हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म, हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन व जुमला सहाबए किराम व अज़वाजे मुतह्हारत अलैहिमुर्रिज़वान से सच्ची महब्बत और उल्फ़त अता फ़रमाए। इस लिये कि अमीरे किशवरे विलायत बाबे मदीना इल्मो हिकमत सय्येदुस्सादात शेरे ख़ुदा मुश्किल कुशा अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मुस्लेमीन हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन नुफ़ूसे क़ुदसिया के फ़ज़ाइलो मरातिब बयान फ़रमाए और उनसे महब्बत व उल्फ़त फ़रमाई है और अल्लाह तआला मौलाए कायनात हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के अक़वाले मुबारका पर अमल करके दीन व दुनिया संवारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

शहादत

अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली मुश्किलकुशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु 18 रमज़ान शरीफ़ या 19 रमज़ान शरीफ़ जुमा की शब में मस्जिद में थे या बक़ौल बाज़ आप नमाज़ में मशग़ूल थे। अब्दुर्रहमान बिन मुलजिम मलऊन ने आप पर क़ातिलाना हम्ला किया और 21 रमज़ान

शरीफ़ शब, यक शबां सन् 40 हिजरी (63 साल की उम्र) में आपका विसाल हुआ।

हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आपकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और आपका मज़ार शरीफ़ नजफ़ अशरफ़ में मरजए अनाम है। (अस्सवाइक़ुल मुहर्रिक़ा, स. 132)

फ़ातिहा व दुआ

हज़रात ! 21 रमज़ान शरीफ़, बरोज़ जुमा मुबारका मुताबिक़ 15 मई 2020, अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली मुश्किलकुशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाहे विलायत व करामत में बाद नमाज़े अस्र, इफ़्तार से पहले फ़ातिहा व दुआ का एहतिमाम करें और हज़रत मौला अली मुश्किलकुशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़ुशी चाहते हैं और दुआ क़बूल कराना चाहते हैं तो महबूबे मुस्तफ़ा हज़रत अबू बकर सिद्दीक़, मुरादे मुस्तफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म, मतलूबे मुस्तफ़ा हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन, उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम और जुम्ला सहाबए किराम व अहले बैते किराम और ख़ास कर दामादे मुस्तफ़ा अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली मुश्किलकुशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत इमामे हसन और हज़रत इमामे हुसैन और जुम्ला औलियाए किराम रिज़्वानुल्लाहि तआला अलैहि अजमईन की बारगाह में फ़ातिहा का नज़राना पैश करें और यक़ीन रखें कि फ़ातिहा और दुआ सब क़बूल है और ख़ासकर यह दुआ करे कि अल्लाह तआला हर बला व बीमारी ख़ासकर **कोरोना वाइरस** की वबा से उम्मत को और अहले सुन्नत को महफ़ूज़ फ़रमाए आमीन सुम्मा आमीन या रब्बल आलमीन 0

अज़ क़लम : (अनवारे मिल्लत, मुफ़्ती) **अनवार अहमद क़ादरी**
बानी व सरबराह आला जामिआ ग़ौसिया ग़रीब नवाज़, खजराना, इन्दौर
Rezvi 9827014789